दक्षिणपंथ 'सोच' पर ऐसे लगी 'मोहर'

- अखिलेश उपाध्याय

वाम और दक्षिण पंथ - भारतीय समाज की दो बेहद अहम धुरियां हैं। दोनों ही विचारधारा वाले लोग दुनिया के कई हिस्सों में हैं। भावनात्मक समझ और भावना प्रबंधन में कमी, इन पंथों के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। बेल्जियम में हुए हालिया एक शोध में भावनात्मक समझ और भावना प्रबंधन में कमी को लेकर दक्षिणपंथी विचारधारा पर कुछ हटकर 'मोहर' लगाई गई है। शोध से जुड़ा रोचक अध्ययन जानी-मानी पत्रिका 'इमोशन' में प्रकाशित भी हुआ है।

वामपंथी और दक्षिणपंथी अनुयायी कई सारे मनोवैज्ञानिक गुणों पर अलग-अलग नजरिया रखते हैं, 'यह बात अध्ययन लेखक - एलेन वान हील, घेंट विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर ने कही है।'

प्रोफेसर वान के अनुसार ''यूं तो कई विद्वानों ने सामान्य रूप से विचारधारा के संज्ञानात्मक आधार, और विशेष रूप से दक्षिणपंथी वैचारिक दृष्टिकोण की जांच की है - लेकिन वर्तमान अध्ययन में, हम यह जांचना चाहते थे कि भावनात्मक क्षमताओं के लिए एक समान संबंध होगा या नहीं।''

दो अध्ययनों में, शोधकर्ताओं ने 983 बेल्जियम के स्नातक छात्रों की भावनात्मक क्षमताओं और राजनीतिक विचारधारा का आकलन किया। दूसरे अध्ययन में भी प्रतिभागियों की संज्ञानात्मक क्षमता की जांच की गई। भावनात्मक क्षमता को तीन परीक्षणों के साथ मापा गया था। पहला - भावनात्मक स्थिति का सिचुएशनल टेस्ट, दूसरा - इमोशनल मैनेजमेंट का सिचुएशनल टेस्ट और तीसरा - जिनेवा इमोशन रिकॉग्निशन टेस्ट।

शोधकर्ताओं ने पाया कि कमजोर भावनात्मक क्षमताओं वाले व्यक्ति - विशेष रूप से भावनात्मक समझ और प्रबंधन - दक्षिणपंथी अधिनायकवाद और सामाजिक प्रभुत्व अभिविन्यास के एक उपाय पर उच्च स्कोर करने के लिए प्रवृत्त हुए।

दक्षिणपंथी अधिनायकवाद एक व्यक्तित्व की विशेषता है, जो राजनीतिक प्राधिकरण को प्रस्तुत करने और अन्य समूहों के प्रति शत्रुता का वर्णन करता है, जबकि सामाजिक प्रभुत्व अभिविन्यास सामाजिक समूहों के बीच असमानता के लिए एक व्यक्ति की प्राथमिकता का माप है।

"इस अध्ययन के परिणाम एकतरफा थे। वे लोग, जो अधिकार और मजबूत नेताओं का समर्थन करते हैं और जो असमानता का बुरा नहीं मानते हैं - दक्षिणपंथी राजनीतिक विचारधारा के अंतर्निहित - भावनात्मक क्षमताओं के निम्न स्तर को दर्शाते हैं, "वान हील ने बताया।

कम भावनात्मक और संज्ञानात्मक क्षमताओं के साथ उन लोगों को भी सहमत होने की संभावना थी जो 'व्हाइट रेस अथवा अन्य सभी रेसों से बेहतर हैं।'

शोधकर्ताओं ने उम्र, लिंग और शिक्षा के स्तर को नियंत्रित किया। लेकिन सभी शोधों की तरह, अध्ययन में कुछ सीमाएं शामिल हैं। अध्ययन में - महज सहसंबंधी डेटा एकत्र किया गया, जिससे कार्य-कारण के अनुमानों को रोका जा सके।

निश्चित रूप से, ऐसे परिणामों की व्याख्या में सावधानी बरती जानी चाहिए - वान हील ने कहा। 'वर्तमान में प्राप्त परिणामों के आधार पर कोई भी किसी भी विचारधारा को बदनाम नहीं कर सकता है। केवल एक दूर के

भविष्य में हम अपने समय पर वापस देखने में सक्षम होंगे, और फिर हम शायद न्याय कर सकते हैं, कि - कौन सी विचारधाराएं सबसे अच्छी थीं। संज्ञानात्मक और भावनात्मक रूप से स्मार्ट लोग गलत निर्णय भी ले सकते हैं।'

'परिणाम एक विशेष संदर्भ में प्राप्त किए गए हैं। क्या लंबे समय से स्थायी लोकतंत्र के साथ पश्चिमी देशों के अलावा अन्य संदर्भों में भी इसी तरह के परिणाम प्राप्त होंगे? चाहे ये प्रवृत्तियां सार्वभौमिक हों, या विशेष संदर्भों तक सीमित हों - हैं, बहुत पेचीदा।'

अध्ययन, 'द रिलेशनशिप इन द इमोशनल एबिलिटीज़ एंड राइट-विंग और पूर्वाग्रहित दृष्टिकोण' एलन वान हील, जोनास डी कीर्सेमेकर, एम्मा ओनेट, टेसा हैवेट, आर्ने रोएट्स और जॉनी आर.जे. फॉन्टेन द्वारा ने - इसका लेखन किया था। (प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।